डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

जन्म तिथि : 15 अक्टूबर 1951

निवास : राम लखन महतो रोड, पुराना जक्कनपुर, पटना–1

सिच्छा : एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी.

सम्प्रति : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पी. एन. के. कॉलेज, अछुआ, पालीगंज, पटना

परकासित पुस्तक :

1. पाँड़ेजी के पतरा (मगही नाटक)
2. प्रेम अइसने होवऽ हे (मगही नाटक)
3. सतरंग (मगही एकांकी संकलन)
4. ठकमुरकी लग गेल (मगही कहानी संकलन)
5. लवकुश चालीसा (हिन्दी काव्य)

सम्पादित पुस्तक :

6. मगही कथा सरोवर
7. मगही एकांकी सरिता
8. मगही समसामयिक कहानी
9. लघुकथा छतीसी

पत्रिका सम्पादन :

10. मगही पत्रिका 'पाटलि' (8 अंक)
11. मगही पत्रिका 'अलका मागधी' (नियमित रूप से लगातार बारह बरिस तक परकासित । (144 अंक अबतक) आगे भी परकासन जारी हे ।

पुरस्कार-सम्मान—

1. बिहार सरकार, राजभाषा विभाग से 'मोहनलाल महतो वियोगी पुरस्कार' से सम्मानित।
2. मगही अकादमी, गया द्वारा 'डॉ० राम प्रसाद सिंह साहित्य पुरस्कार 1997'।
3. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड 1999'।
4. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान।

ई निबंध में अप्पन मातृभासा के महातम बतावल गेल हे। मातृभासा अदमी के अइसन पहचान हे, जेकरा बोलतहीं लोग जान जाहे कि ऊ कहाँ के हथ। एकरा में देस-विदेस के विभिन्न भासा-भासी लोग के उदाहरन देके बतावल गेल हे कि उनके जइसन मगहियन के भी अप्पन मातृभासा मगही से लगाव होवे के चाही।

मातृभासा के महातम

ठीके कहल जाहे कि दुनिया में कोई भी भासा अपने आप में न तो नीमन होवऽ हे न बाउर। ऊ तो बोलेवला पर निर्भर हे। हरेक अदमी के अप्पन भासा मधुर आउ प्रिय लगऽ हे, जबकि दोसर भासा कर्कस आउ अप्रिय। एही कारन हे कि बोलेवला हर बेकती के अप्पन मातृभासा से बहुत लगाव होवऽ हे आउ दोसर भासा के मुकाबला में ऊ अप्पन भासा के आदर भी बेसी करऽ हे।

ई बात ठीक भी हे। अगर कोई भासा के आदर, सम्मान आउ ओकर उचित स्थान ओकरा बोलेवला बेकती न देत, तब का दोसर भासा-भासी देतन ? दुनिया में हर समझदार अदमी अप्पन मातृभूमि आउ मातृभासा के उचित सम्मान आउ स्थान दिलावे ला प्रयत्नसील रहऽ हे। एही कोसिस से भरल भावना के रास्ट्रीय भावना कहल जाहे।

कोई साम्राज्यवादी देस जब कोई दोसर देस पर अप्पन साम्राज्य स्थापित करेला चाहऽ हे, तब सबसे पहिले ऊ अधीनस्थ देस के सभ्यता, संस्कृति आउ धरम पर परहार करके अपना जइसन बनावे के कोसिस करऽ हे। बाकि अइसन करे में ओकरा तबतक सफलता न मिले, जबतक कि ऊ अधीनस्थ देस के भासा पर अधिकार न कर लेवे। ठीक एकर विपरीत रास्ट्रप्रेमी आउ देसभक्त लोग अप्पन भासा

के साहित्य के बचा के रक्खऽ हथ, काहे कि अगर ई बच जायत तब एकरे माध्यम से अप्पन सभ्यता आउ संस्कृति के सुरक्षित रक्खल जा सके हे।

हमनी के भारत देस में जब अँगरेज अयलन हल तब ऊ लोग भी अप्पन अंगरेजी भासा के परचार खूब कयलन। इहाँ तक कि कानून बना देलन कि जे अंगरेजी जानतन उनके सरकारी नोकरी मिलत। एकर उल्टा अजादी के संग्राम के दौरान क्रान्तिकारी लोग अंगरेजी के बहिस्कार करइत गुप्त पत्राचार हिन्दी में करके देस के एक सूता में बाँधे के कोसिस कयलन आउ ओकरा में सफलता भी मिलल।

आज देस अजाद हो गेल हे, बाकि भासा के गुलामी आजो बनल हे। देस के रास्ट्रभासा हिन्दी के अलावे हर प्रांत में किसिम-किसिम के भासा बोलल जाहे। बाकि आजो लोग अप्पन मातृभासा आउ रास्ट्रभासा के बजाय अंगरेजी बोले में अपना के बेसी गौरवान्वित समझऽ हथ। जब हमनी अंगरेज के गुलाम हली, तब लोग के दिमाग में ई बात हल कि मालिक के भासा होवे से अंगरेजी गुलाम भारत के कोई भासा के मुकाबले जरूर श्रेस्ठ होयत। बाकि अजादी के साठ बरिस के बाद आजो ओही सोचना बड़का भूल न हे, तऽ आउ का हे ?

अब समय आ गेल हे जब राष्ट्रभासा के रूप में हिन्दी के आउ प्रान्तीय भासा के रूप में अन्य छेत्रीय भासा के उचित स्थान मिले के चाहीं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गौर करके देखल जाय, तब खोजला पर भी अप्पन मातृभासा आउ रास्ट्रभासा के अइसन अपमान के उदाहरन दुनिया में न मिलत जइसन भारत में होवऽ हे। मातृभासा के अपमान के बजाय ओकर सम्मान के उदाहरन बहुत मिलत। एकरा में कोई खास देस के बात न हे। छोटा से छोटा आउ बड़ा से बड़ा देस के नेता अप्पन देस के भासा के प्रति सम्मान आउ प्यार परदर्सित करऽ हथ।

दुनिया के सबसे बड़का देस सोवियत संघ के रास्ट्रपति ब्रेझनेव जब भारत में अयलन हल, तब संसद के संयुक्त सदन में अप्पन देस के भासा 'रूसी' में भासन देलन हल। उनका मालूम हलइन कि भारत में रूसी भासा समझे वला कोई न हे, तइयो ऊ अप्पन देस के भासा बोल के ओकरा गौरवपूर्ण स्थान देलन। भारत सरकार उनकर भासन के अंगरेजी में अनुवाद रेडियो पर परसारित कैलक।

बड़का देस के बाद छोटका देस के उदाहरन देखल जाय। बंगला देस के नया-नया अजादी मिलल हल। शेख मुजीबुर रहमान पाकिस्तान के जेल से रिहा होके बंगला देस लउटे के क्रम में हवाई जहाज बदले ला दिल्ली हवाई अड्डा पर उतरलन। हवाई अड्डा पर उनकर स्वागत में भारत के रास्ट्रपति वी० वी० गिरि के अंगरेजी में

भासन होयल, जबकि उनकर देस के अजाद करावे में मदद करे ला शेख मुजीबुर रहमान जे धन्यवाद देलन से अप्पन भासा 'बँगला' में। वास्तव में बंगला में भासन देके ऊ ई जाहिर कर देलन कि हम्मर नयका देस के रास्ट्रभासा बंगला होयत। अप्पन मातृभासा के प्रति लगाव के एही भावना हरेक भारतवासी में भी होवे के चाहीं।

जहाँ तक मगही भासा के प्रति लगाव के सवाल हे, तऽ एतना कहल जा सकऽ हे कि भारत के अन्य भासाभासी के मुकाबला में मगहियन लोग सबसे जादे अप्पन भासा के हीन समझऽ हथ आउ ओकरा उपेक्षा के नजर से देखऽ हथ। ढेर लोग तो मगही में बोले-बतिआवे में अपना के छोटा भी महसूस करऽ हथ। पहिले मगही भासा में पढ़े-लिखे के परम्परा न हल, ई से कुछ लोग के दिमाग में ई बात भी बइठल हे कि ई तो अनपढ़ आउ गँवार लोग के भासा हे।

ई बात के परमान हमरा तब मिलल जब हम देखली कि हम्मर एगो परम मित्र सिन्हा जी अप्पन बेटी के एक थप्पर लगा देलन। बात एतने हल कि हम सिन्हा जी के बैठक में पहुँचल हली आउ करीब एक घंटा से हँसी-मजाक करइत हली। उनकर बेटी आके एतने कहलक—'बाबूजी, मइया बोलावइत हवऽ !'

बस, बेचारी के एक थप्पड़ लगाके डाँटे लगलन–'ये क्या बोल रही हो गँवारों की भासा ? इतना नहीं कह सकती कि माँ बुला रही है।'

ऊ ढेर बात आउ बोललन, बाकि हम्मर दिमाग गरम हो गेल हल, ई से हमरा उनकर आउ भासन सुनाइये न पड़ल। संयोग से खोजइत-खोजइत हम्मर बेटी भी तुरतहीं आ गेल आउ हमरा से कह देलक—'बाबूजी, मइया बोलावइत हवऽ !'

सिन्हा जी के बेटी थप्पड़ खा के भी बिना रोयले उहँइ खड़ा होके सिन्हा जी के भासन सुनतहीं हल। हम्मर बेटी के मुँह से ओही बात सुनके ओकरा टकटक्की लगाके देखे लगल।

अब हमरा बोले के मौका मिल गेल हल–'बेटी, तोहनी दुन्नो एक्के इस्कूल के एक्के किलास में पढ़ऽ हऽ। हमरा बतावऽ तो तोहनी का–का पढ़ऽ हऽ ? अच्छा, सबसे पहिले ई बतावऽ कि कउन-कउन भासा तोहनी जानऽ हऽ ?'

हम्मर बेटी तुरंत बता देलक–'हिन्दी, मगही, अंगरेजी आउ संस्कृत।

सिन्हा जी के बेटी रुक-रुक के बोले लगल–'हिन्दी, अँगरेजी, संस्कृत आउ .....' एतना कहके ऊ सिन्हा जी के ताके लगल।

हम दुन्नो बचियन के जाय ला बोल देली। ऊ दुन्नो के चल गेला के बाद हम गम्भीर स्वर में सिन्हा जी से कहहीं देली– 'सिन्हा जी ! रास्ट्रभासा हिन्दी आउ अन्तरराष्ट्रीय भासा अँगरेजी के ज्ञान बहुत जरूरी हे। अप्पन संस्कृति के बारे में जानेला संस्कृत पढ़ना भी ठीक हे बाकि अप्पन मातृभासा मगही में बोलल खराब काहे हे ? हम्मर बेटी जे मगही के जानकारी मिला के चार भासा जानऽ हे, से तीन भासा जाने ओली तोर बेटी से जादे ज्ञानी कहलायत कि नऽ। जेकरा सुविधा होवे से पाँच, छव, आउ बेसी भासा भी पढ़ सकऽ हे, ओकरा आउ बड़का ज्ञानी कहल जायत।'

सिन्हा जी के हम्मर बात समझ में आयल कि न, ई बात तो हमरा न मालूम हे, बाकि मगहियन में ओइसन अदमी के कमी न हे। सच तो ई हे कि जउन बेकती अप्पन घर में मगही में सब बात करऽ हथ, ओहू घर से बाहर निकलतहीं हिन्दी में बोले लगऽ हथ।

दोसर भासा-भासी लोग में ई बात देखे में न आवे। पंजाबी होवथ चाहे बंगाली, दुनिया में कहीं भी दू गो एक्के भासा जानेवला भेंटा जयतन कि बस, अप्पन भासा में बतियाये लगतन।

अप्पन भासा के प्रति अइसने जुड़ाव आउ लगाव के भाव मगहियन के सोभाव में भी होवे के चाहीं। एकरे अभाव में मगही भासा के परभाव ओतना न हे जेतना आउ सब भासा के हे। एकरा ला हमनी के हमेसा कोसिस करते रहे पड़त।

कोई भी भासा के प्रयोग न होवे से ऊ मृतप्राय हो जाहे। बोलचाल न रहे से ऊ खाली पुस्तक के भासा बनके रह जाहे। बाकि मगही के स्थिति ई कथन के ठीक उल्टा हे। काहे कि लोग के बोल-चाल में तो मगही के खूबे प्रयोग होवऽ हे, बाकि लिखा-पढ़ी में एकर प्रयोग कम होवे हे। इहाँ तक कि कोई चिट्ठी-चपाती भी मगही में लिखे के परम्परा न हे। सबसे पहिले तो हमनी के एही संकल्प करे के चाहीं कि एक मगहिया दोसर मगहिया के साथे अनिवार्य रूप से मगही भासा में पत्राचार करे।

मगही भासा के लोकप्रिय बनावेला सबसे जरूरी हे कि मगही में दैनिक अखबार निकालल जाय। जब मराठी, गुजराती, पंजाबी आउ बंगला में अखबार निकल सकऽ हे, तब मगही में छपल अखबार लोग काहे न पढ़तन ?

मगही भासा के लोकप्रिय बनावेला मगही में सिनेमा भी बने के चाहीं । सिनेमा एगो अइसन प्रभावसाली माध्यम हे कि ओकरा से दोसर भासा-भासी लोग भी परभावित हो जा हथ।

हम ई जे मगही के महातम सुनइली हे, एकर मतलब ई न हे कि हमनी मगही भासा के हिन्दी के समानान्तर खड़ा करेला चाहित ही। वास्तव में मगही भासा जेतने विकसित होयत, ओतने हिन्दी भासा भी मजबूत आउ समृद्ध होयत। विद्यापति, सूर, तुलसी, रसखान, मीरा, जायसी आउ कबीर जइसन महाकवि हिन्दी में न लिख के अप्पन रचना लोकभासा में कयलन हल। ओइसहीं मगही के रचनाकार भी मगही में रचना करके हिन्दीये के भंडार भरतन।

हमरा पूरा बिस्वास हे कि अब मगही भासा के महातम लोग के समझ में आवत आउ मगही भासा-भासी लोग अप्पन भासा के उचित स्थान दिलावेला प्रयत्न करतन। ऊ दिन भी दूर न हे, जब दोसर भासा-भासी लोग भी मगही के उचित आदर देतन।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) सोवियत संघ के रास्ट्रपति ब्रेझनेव भारत के संसद में कउन भासा में भासन देलन आउ काहे ?

   (ख) 'भासा के गुलामी आजो बनल हे'—ई बात के समझावऽ।

   (ग) लेखक के एगो परम मित्र सिन्हा जी अप्पन बेटी के एक थप्पड़ काहे लगा देलन ? उनकर ई बेयोहार से तोर दिमाग पर का असर पड़ऽ हे ?

   (घ) 'कुछ लोग कहऽ हथ कि अलग-अलग भासा के बढ़ावा से देस टूट जायत'—एकरा से तूँ कहाँ तक सहमत हऽ ?

   (ङ) पाठ के अन्त में आयल सात गो कवि के नाम बतावल गेल हे। ऊ लोग के लोक-भासा के नाम बतावऽ।

लिखित :

1. निबंधकार डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य के परिचय संक्षेप में लिखऽ।
2. दुनिया में सबसे मधुर भासा कउन हे ?
3. क्रांतिकारी लोग गुप्त पत्राचार करके कउन बात में सफलता प्राप्त कैलन ?
4. मालिक के भासा आउ गुलाम के भासा के द्वारा कउन बात बतावे के कोसिस कैल गेल हे ?

5. ई पाठ में बड़का देस आउ छोटका देस के उदाहरन देके का कहल गेल हे ?

6. अप्पन मातृभासा के बारे में मगहियन के कइसन सोंच हे ?

7. मगही भासा के विकसित होला से हिन्दी भासा पर कइसन असर पड़त ?

8. कइएक भासा जानेवला के बीच में जादे बड़का विद्वान किनका कहल जायत ?

9. मगही भासा के प्रति कइसे जुड़ाव हो सकऽ हे ? कोई तीन गो उपाय बतावल जाय।

10. सप्रसंग व्याख्या करल जाय :—

(क) उनका मालूम हलइन कि भारत में रूसी भासा समझे वला कोई न हे, तइयो ऊ अप्पन देस के भासा बोल के ओकरा गौरवपूर्ण स्थान देलन।

(ख) अप्पन भासा के प्रति अइसने जुड़ाव आउ लगाव के भाव मगहियन के सोभाव में भी होवे के चाहीं। एकरे अभाव में मगही भासा के परभाव ओतना न हे, जेतना आउ सब भासा के हे।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सब्द से विसेसन बनावऽ आउ ओकरा से वाक्य वनावऽ :—
रास्ट्र, सम्मान, प्रान्त, साहित्य, दिन

2. नीचे लिखल उपसर्ग से सब्द बनावऽ :—
नी, अ, अनु, अप, पर

योग्यता-विस्तार :

1. 'मगही के महातम' पर अप्पन किलास में एगो विचार गोस्ठी रखऽ।

2. अप्पन मित्र के पास एगो पत्र लिखऽ जेकरा में मगही के महातम बतावऽ।

3. आज मगही के दुरदसा के का कारन हे ? कारन गिनावऽ।

सब्दार्थ :

नीमन	—	अच्छा
बाउर	—	खराब
सूता	—	धागा

बोले-बतिआवे	—	बातचीत करे
टकटक्की लगाके	—	लगातार ध्यान देके
ताके लगल	—	देखे लगल
भासा-भासी	—	भासा बोलेवला
जुड़ाव	—	सम्बन्ध
लगाव	—	नजदीकी
भाव	—	सम्वेदना
सोभाव	—	परकिरती / आदत
अभाव	—	कमी
परभाव	—	असर
चिट्ठी-चपाती	—	पत्र
महातम	—	महत्व

●●●